4

संयोजन (Composition)

संयोजन अंतर–आत्मा से निकला हुआ वह भाव है, जिसको कलाकार रंग, रेखा, आकार इत्यादि किसी भी सतह पर इस प्रकार उन्हें सुसज्जित करता है, जिससे एक अच्छे संयोजन का निर्माण हो सके। संयोजन में जितने भी आकारों का प्रयोग किया जाता है उन सबमें संतुलन, समन्वय, लय होना चाहिए। अगर संयोजन में से कोई भी आकार हटा लिया जाए तो संयोजन असंतुलित हो जाता है। इस तरह आकारों का तालमेल दूसरे आकारों के साथ होना चाहिए जिससे संतुलन बना रहे। संयोजन में जब सारे तत्वों का सही प्रयोग होगा तब जाकर एक अच्छा संयोजन तैयार होगा। चित्र बनाने की प्रक्रिया और उनमें प्रयोग किए गए सभी तत्वों को हम संयोजन कहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आपः

- किसी कागज़ पर 2–3 वस्तुओं या उससे ज्यादा आकारों को व्यवस्थित ढंग से रखना सीख सकेंगे;
- संयोजन के निर्माण के लिए आकारों का प्रभावी रूप से निर्माण कर सकेंगे;
- पैंसिल से छाया और प्रकाश दर्शाने में सक्षम हो सकेंगे;
- कल्पना के आधार पर संयोजन के लिए रेखा-चित्र बना सकेंगे;
- विषय-वस्तु का प्रभावी ढंग से चुनाव कर सकेंगे; और
- रंगों का सही प्रकार से प्रयोग कर सकेंगे।

संयोजन में ज्यामितीय आकृतियाँ (Geometrical Forms of Composition)

जिस संयोजन में ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग होता है उसे ज्यामितीय संयोजन कहते हैं। संयोजन बनाने के लिए एक सादा कागज लीजिए जिसे 10"x10" या 10"x15"

टिप्पणी

के आकार में काट लें अथवा अपनी कल्पना में संयोजन के अनुसार स्केल और पैंसिल की मदद से पेपर पर आकार बना लीजिए। उसके अंदर गोलाकार, चौकोर, त्रिकोणाकार आदि बनावट पैंसिल और स्केल की सहायता से अंकित करें एवं उनमें रंग भरकर संयोजन बनाएं। या फिर उन्हीं आकारों को काले या विभिन्न रंगों के कागज को काट कर एक कागज पर विभिन्न प्रकार से सजाएँ। इस प्रकार बुनियादी संयोजन का आप को ज्ञान होगा और इस तरह संयोजन बनाने में आसानी होगी।

चित्र चाहे किसी माध्यम में बनाना हो यानि जल रंग, पोस्टर रंग, आदि में, लेकिन ध्यान रहे कि उसके संयोजन में संतुलन होना आवश्यक है। चित्र 1,2,3 तथा 4 देखें।

चित्र सं. 1

चित्र सं. 2

चित्र सं. 3

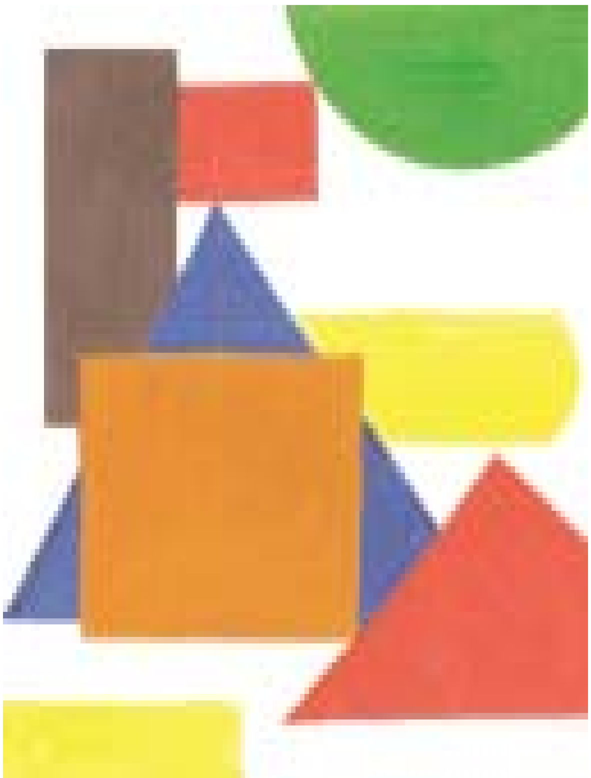

चित्र सं. 4

टिप्पणी

संकल्पनात्मक संयोजन (Conceptual Composition)

इस प्रकार का संयोजन विद्यार्थी की कल्पना शक्ति पर निर्भर करता है। जिंदगी के विभिन्न अनुभवों के आधार पर संकल्पनात्मक संयोजन बनाया जाता है।

संयोजन की रचना से पहले विषय-वस्तु का निर्णय भी महत्त्वपूर्ण है। परंतु यह विद्यार्थी पर निर्भर करता है कि वह किस विषय-वस्तु का चुनाव करना चाहता है। जैसे, मछली बेचने वाला, पटरी पर ढाबा, चित्र संख्या 5 देखें। मेला, वर्षा का द श्य, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा। उदाहरण के लिए आप को जिस विषय पर चित्र बनाना है, उस विषय पर 4–5 प्राथमिक रूप अलग–अलग प्रकार से अपनी सोच या कल्पना के आधार पर बनाएं। इनमें से जो संयोजन आपको सबसे अच्छा लगे, उसे फिर बड़ा करके पेपर या कसी सतह पर बनाएं।

संयोजन कलाकार के मन के अनुसार ऊर्ध्वाधर या क्षैतिज (वर्टिकल या होरिजौंटल) होगा। यह संयोजन बनाने वाले पर पूर्ण रूप से निर्भर करता है। संयोजन में जो भी तत्व प्रयोग किए गए हैं ध्यान रहे कि वे एक दूसरे से संबंध रखते हों। अगर किसी तत्व को उस संयोजन से हटा लिया जाए तो संयोजन उस तत्व के बिना अधूरा होगा। संयोजन में एक आकर्षक केंद्रीय बिंदु (फोकल पॉइंट) होता है। संयोजन में जितने तत्व हैं उन सब पर नज़र घूमने के बाद ''फोकल पाइंट'' पर नजर रूकनी चाहिए। एक अच्छे संयोजन में संतुलन, समन्वय और लय का होना ज़रूरी है तभी संयोजन सही होता है। चित्र सं. 5 और 6 को देखें। दो पक्षियों का एक पेड़ की शाखा में समन्वय और संतुलन के साथ संयोजन किया गया है। रेखाओं के ड्राइंग के बाद संयोजन में रंग भरा गया है।

चित्र सं. 5

टिप्पणी

चित्र सं. 6

वस्तु-चित्र का संयोजन (Composition with Object)

संयोजन के लिए निम्नलिखित वस्तुओं का उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :-

जग	फूलदान
कप–प्लेट	सब्जियाँ
ब्रेड	स्टोव
अन्डा	बाल्टी
चाकू	भगोना
फल	टोकरी
किताब	बोतल

इनमें से कुछ चीजों को छाँटकर बराबर जगह पर सजाएँ और पीछे एक परदा भी लटकाएँ। जैसा वस्तु-चित्रण करना हो, उसी प्रकार की वस्तु का चयन कीजिए। संयोजन आरंभ करने से पहले दो–चार प्राथमिक रेखाचित्र बनाएं। (चित्र सं. 7 देखें) इसके पश्चात् पेपर पर चित्र बनाना शुरू कर सकते हैं।

चित्र सं. 7

वस्तु-चित्रण से विद्यार्थी की परिद ष्टि का ज्ञान होता है। आगे–पीछे की चीज़ों को कैसे दर्शाएंगे। छाया और प्रकाश को भी समझ सकेंगे। छोटे-बड़े आकार को बनाने की समझ भी विद्यार्थी को होगी। एक दो वस्तु–चित्रण पैंसिल से बनाकर प्रकाश और छाया को समझना चाहिए (चित्र सं. 7 देखें)। फिर रंग का प्रयोग शुरू करना चाहिए। संयोजन में रंगों के प्रयोग में संतुलन, समन्वय और लय होना ज़रूरी होता है। चित्र सं. 8 देखें। आप कुछ सब्जियों को चुन सकते हैं और पार्श्व में रंगीन कपड़े के साथ मेज पर ठीक प्रकार रख सकते हैं (चित्र सं. 9 देखें)।

टिप्पणी

चित्र सं. 8

चित्र सं. 9

टिप्पणी

प्राकृतिक द श्य का संयोजन (Composition Based on Nature)

कोई भी प्राकृतिक द श्य बनाने में गाँव, शहर, पहाड़, झरना, नदी, नाले आदि द श्यों को उपयोग में ला सकते हैं। प्राकृतिक द श्य में आमतौर पर होरीजोंटल द श्य संयोजन का प्रयोग होता है।

उदाहरण के लिए आप कोई भी द श्य चुन लीजिए। उस द श्य में जो कुछ भी नजर आ रहा हो, उन सबको संयोजन में दर्शाया जा सकता है। संयोजन में आकर्षक केंद्र बिंदु (Focal Point) का होना आवश्यक होता है। (चित्र संख्या 10 देखें)।

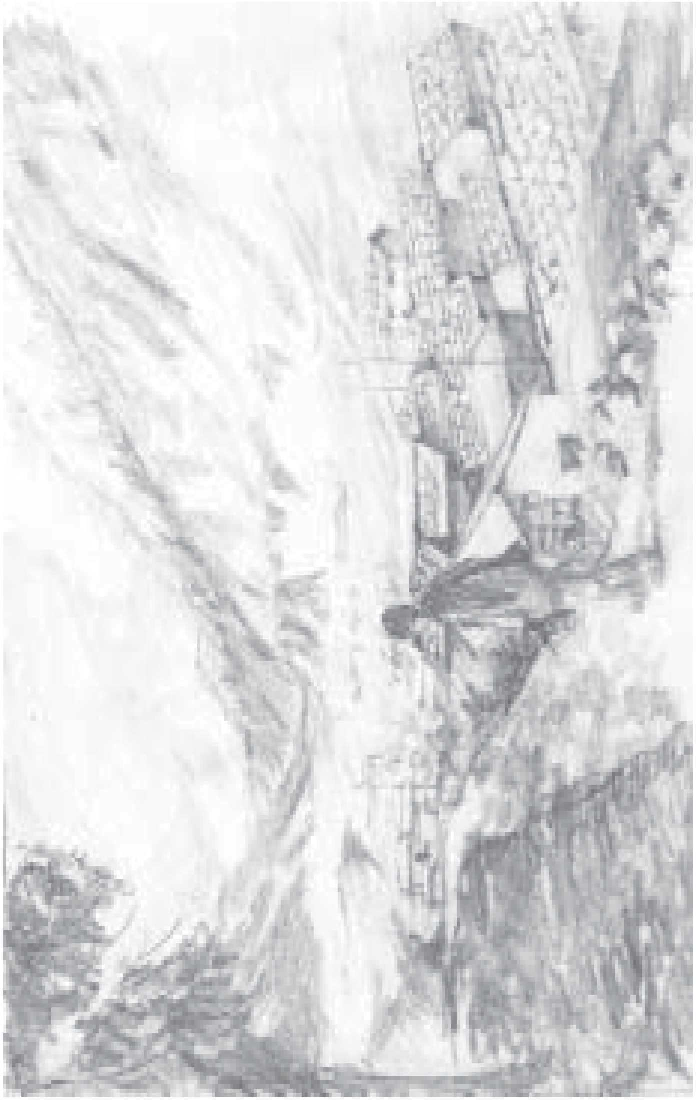

चित्र सं. 10

रंग भरने से पहले द श्य संयोजन को पैंसिल से बारीकी से बनाएं। और पैंसिल से अलग–अलग छाया का प्रयोग करें जिससे प्रकाश और छाया का आपको अच्छा ज्ञान होगा। इसके बाद द श्य संयोजन में रंगों का प्रयोग शुरू कर सकते हैं। रंग भरते समय

खास जगह को प्रकाश में और दूसरी जगहों को मध्यम और गहरे रंग के प्रयोग के द्वारा छाया में रखते हैं। इससे द श्य संयोजन में प्रकाश और छाया का प्रयोग छात्र को साफ नजर आएगा। रंगों का संतुलन भी होना जरूरी है। समन्वय और लय का होना एक अच्छे संयोजन को दर्शाता है। चित्र संख्या 11 देखें।

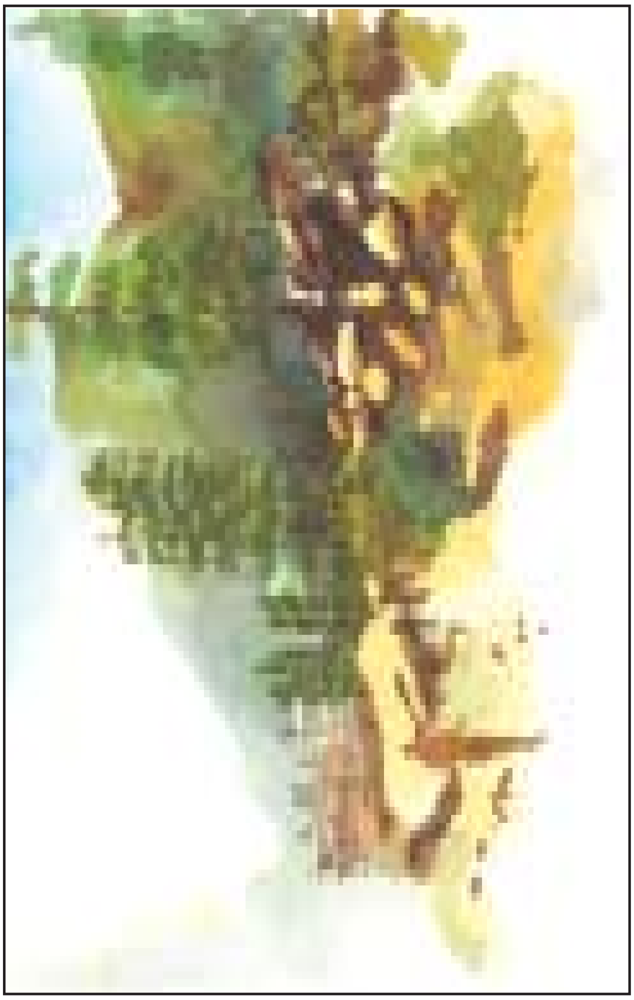

चित्र सं. 11

सजावटी आकार का संयोजन (Decorative Form of Composition)

आप प्राकृतिक वस्तुओं के आधार पर फूल, पत्ते, पेड़, लताओं, चिड़ियों, भौरों, तितलियों, गिलहरियों आदि का स्केच बनाइए। इन स्केचों को विभिन्न तरह से डिज़ाइन का रूप दीजिए तथा सजावटी आकार के द्वारा संयोजन कीजिए। इस प्रकार का संयोजन दूसरे संयोजनों से भिन्न होगा। एक अच्छे संयोजन में संतुलन, समन्वय, लय का होना जरूरी होता है। रंगों का प्रयोग भी संतुलित होना चाहिए। चित्र संख्या 12, 13, 14 एवं 15 देखें।

चित्र सं. 12

चित्र सं. 13

चित्र सं. 14

चित्र सं. 15

टिप्पणी

संयोजन के लिए आवश्यक सामग्री

चित्र संयोजन के लिए विद्यार्थियों के पास निम्नलिखित सामग्री का होना जरूरी है:

ड्राइंग बोर्ड, मोटा गत्ता, सफेद ड्राइंग शीट, चार्ट पेपर, बोर्ड पिन, पैंसिल HB, 2B, 4B, 6B, रबड़, कटर, ब्रुश, कलर प्लेट, मग आदि।

संयोजन में रंगों का प्रयोग

संयोजन में पानी से प्रयोग होने वाले रंगों का प्रयोग हल्के से गहरे की ओर किया जाता है। एक दो लेयर हल्के रंग लगाने के बाद चित्र में हल्के, मध्यम, और गहरे रंग का प्रयोग पता चलने लगता है। इस प्रकार संयोजन में रंगों के सही प्रयोग से छाया को दिखाया जा सकता है। चित्र संख्या 16 देखें।

चित्र सं. 16

सारांश

चित्र में हर तत्वों को सही रूप में एकत्रित करने और उनके प्रयोग को संयोजन कहते हैं। वस्तु-चित्रण में यथार्थ रूप में वस्तु को देखकर सही ढंग से चित्रण करना आवश्यक होता है। वस्तुओं को इस प्रकार व्यवस्थित ढंग से एक सतह पर रखें, जिससे एक विषय-वस्तु का निर्माण हो सके।

कल्पना के आधार पर बनाए जाने वाले संयोजन में अपनी इच्छा के अनुसार संयोजन बनाए जाते हैं और रंगों का प्रयोग भी अपने मन के अनुसार करते हैं। द श्य चित्र संयोजन में प्रकृति की गोद में बैठकर हम जो कुछ देखते हैं, उसी तरह का संयोजन बनाते हैं। या कुछ द श्यों को हम संयोजन से हटा देते हैं और कुछ अपने अनुसार जोड़ भी देते

हैं। परंतु यह काम एक अनुभवी छात्र ही कर सकता है। द श्य-चित्रण में सही रंगों का प्रयोग होना चाहिए।

सजावटी संयोजन में हम प्रकृति से फूल, पत्ते, चिड़ियों, भौरों के स्केच के बाद हम अपनी मर्जी से पेपर पर ड़िजाइन बनाते हैं और अपनी कल्पना के आधार पर ही रंगों का प्रयोग करते हैं। संयोजन में रंगों के प्रयोग में संतुलन होना चाहिए तभी संयोजन का सही निर्माण होगा।

मॉडल प्रश्न

1. जग, कप, प्लेट, फूल–दान आदि का स्केच बनाइए और फिर उनका संयोजन कीजिए।
2. चौकोर, गोलाकार, त्रिकोणाकार काले और रंगीन कागज ज्यामितीय फॉर्म में संयोजन कीजिए।
3. कल्पना के आधार पर किसी विषय-वस्तु पर एक चित्र का संयोजन कीजिए।
4. प्रकृति के सौंदर्य को देखकर एक द श्य-चित्रण कीजिए।
5. फूल, पत्ते, गिलहरी, तितलियों को स्केच करके एक डिज़ाइन का रूप दीजिए।
6. नीचे दिए गए चित्र 17 में रंग भरें।

चित्र सं. 17

टिप्पणी

शब्दकोष

संतुलन	– उचित परिमाण में किसी आकार को एक रूप देना।
लय	– एक आकार का दूसरे आकार के साथ मिलना।
आकार	– रूप (फॉर्म)
फोकल पाइंट	– आकर्षक केंद्र–बिन्दु।
परिद ष्टि	– द ष्टिसीमा।
समन्वय	– जब फॉर्म्स आपस में एक दूसरे के साथ छन्दमय तथा संतुलित रूप में एक मनोरम आकार प्राप्त करता है।

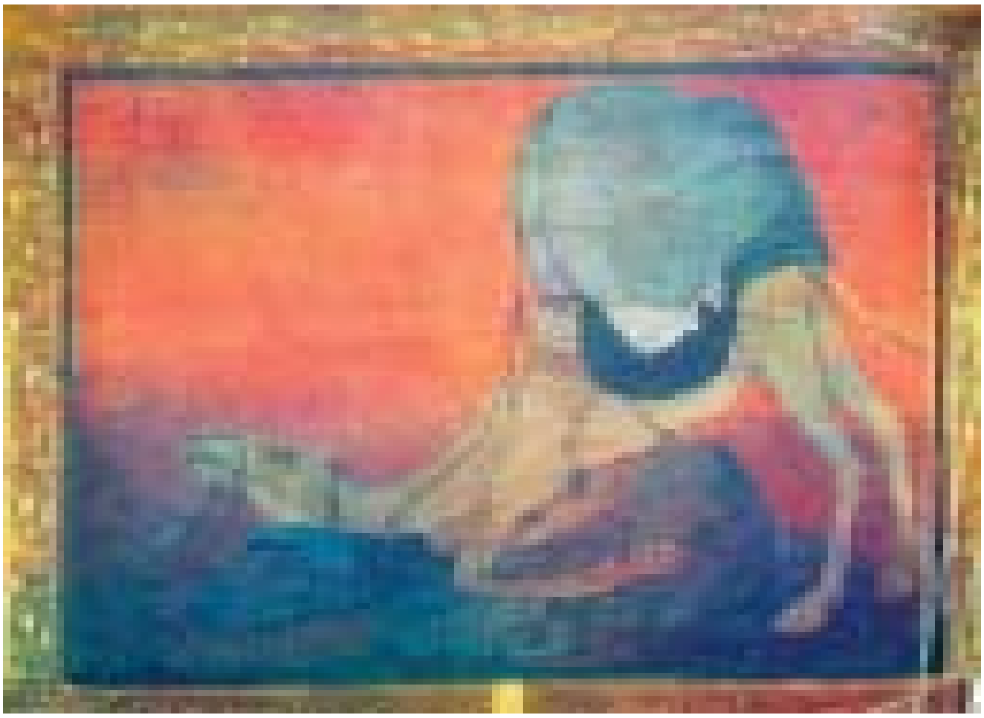

एंड ऑफ जरनी
चित्रकार–अवनीन्द्र नाथ टैगोर
(वाश पेंटिंग)

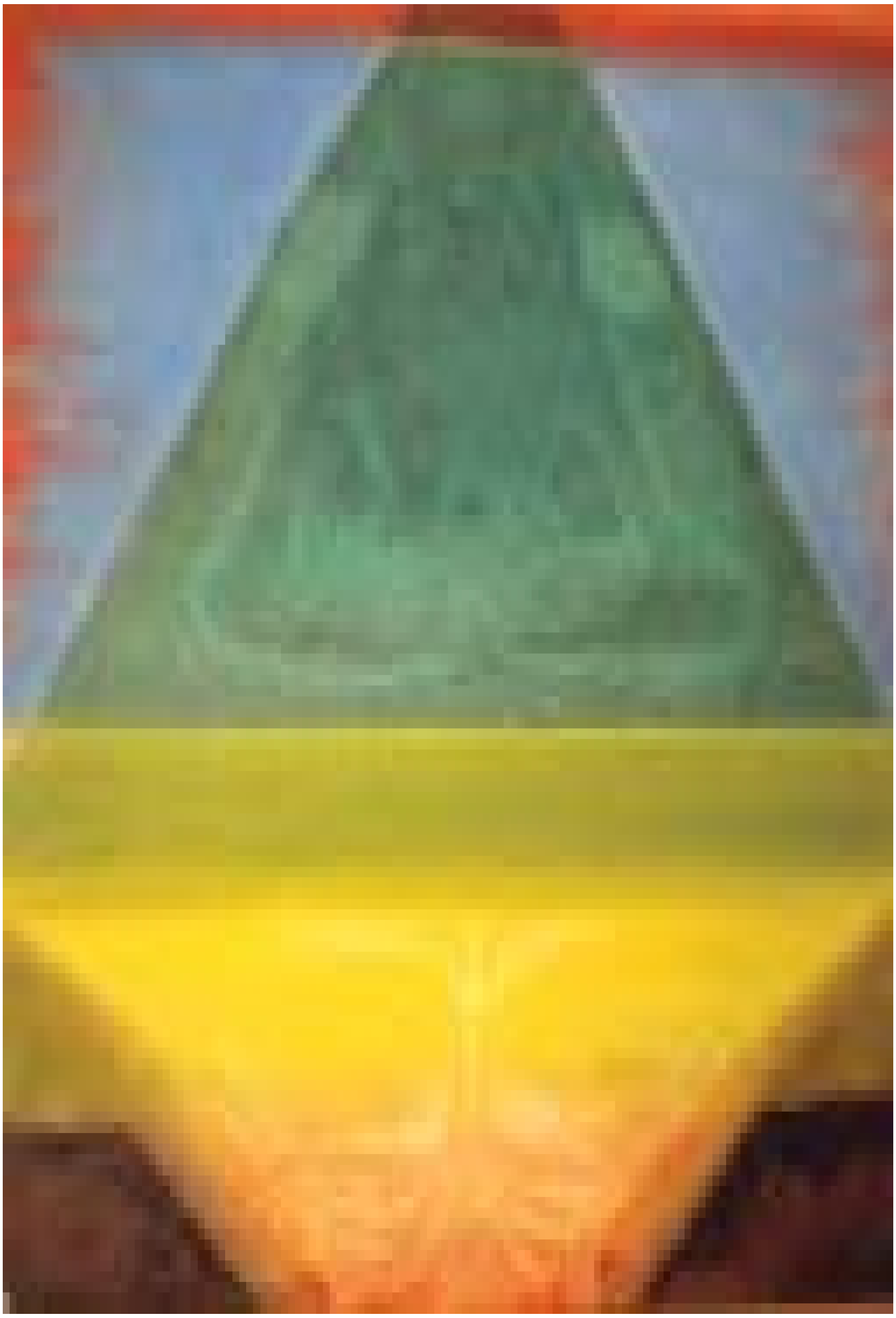

रावणानू ग्रहमूर्ति
(तेल रंग)